श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ अक्तुबर- 2022

ऐनरोलमेन्ट नंबर ५

शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	आचार
(२)	स्वार्थ
(३)	अपराजित
(४)	कुलक्षणी
(५)	छिद्र
(६)	विनय
(७)	जयणा
(८)	संवर
(९)	मन
(१०)	अनाभोग
(११)	धर्मप्रवेश
(१२)	शाश्वत
(१३)	सोपान
(१४)	निर्माल्य
(१५)	शांति
(१६)	पाप तत्व
(१७)	एकमे
(१८)	नंदनवन
(१९)	चर्मरोगी
(२०)	अपयश

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	कपोत
(२)	निद्रा-निद्रा
(३)	साधु- जीवन
(४)	चिलाती पुत्र
(५)	जिन मुरति
(६)	शीत
(७)	पाप
(८)	रावण
(९)	लोभ
(१०)	श्रेणिक राजा
(११)	श्री शांतिनाथ
(१२)	विकलेन्द्रिय
(१३)	ललितपुर
(१४)	द्वाणिकी
(१५)	नंद्यावर्त
(१६)	क्रियायें
(१७)	मच्छर
(१८)	स्वर्ग में
(१९)	मिथ्यात्व
(२०)	स्थान

(५)	क्रियायें
(६)	मच्छर
(७)	स्वर्ग में
(८)	मिथ्यात्व
(९)	स्थान
(१०)	परितापनिकी
(११)	बहुमान
(१२)	अनंतीवार
(१३)	अप्रत्याख्यानिकी
(१४)	वर्तमानकाल में
(१५)	सात प्रकार के
(१६)	अशुभ विहायोगति
(१७)	धर्मराज्य के श्रेष्ठ
(१८)	सामुदानिकी
(१९)	गंध हस्ति समान
(२०)	दुस्वर

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	कम
(२)	वेश्यागमन
(३)	स्थिर
(४)	क्लिष्ट

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	७	(६)	१०
(२)	५	(७)	३
(३)	९	(८)	४
(४)	१	(९)	२
(५)	८	(१०)	६

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	२३
(२)	१४
(३)	२५
(४)	५५
(५)	४२
(६)	९
(७)	८२
(८)	२१
(९)	६
(१०)	१२

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	९
(२)	×	(२)	१३
(३)	×	(३)	२०
(४)	✓	(४)	१७
(५)	✓	(५)	४
(६)	×	(६)	१२
(७)	×	(७)	१४
(८)	×	(८)	२२
(९)	✓	(९)	६
(१०)	×	(१०)	१७

प्रश्न-१ मिले हुए गुण		प्रश्न-२ मिले हुए गुण		प्रश्न-३ मिले हुए गुण		प्रश्न-४ मिले हुए गुण		प्रश्न-५ मिले हुए गुण		प्रश्न-६ मिले हुए गुण		प्रश्न-७ मिले हुए गुण		प्रश्न-८ मिले हुए गुण		कुल गुण
	+		+		+		+		+		+		+		=	

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. पाप कर्म मे आते ज्ञानावरणीय कर्म के दश भेद पाप कर्म मे आते है। मतिज्ञानावरणीय कर्म २ श्रुतज्ञानावरणीय कर्म, ३ अवधिज्ञानावरणीय कर्म, ४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्म, ५ केवलज्ञानावरणीय कर्म ६ दानांतराय कर्म, ७ लाभांतराय कर्म ८ भोगांतराय कर्म ९ उपभोगांतराय कर्म १० वीर्यांतराय कर्म

२. चोरी का दूषण आज बहुत बढते जा रहा है। प्रामणिकता घटती जा रही है। आज का चोर बहुत समझदारी से चोरी करता है। जैसे जँहा मिले वँहा से रिश्वत खाना, टैक्स की चोरी आज का चोर भी बहुत अपडेट हो गया है।
मदिरा का व्यसन :- शराब ने बहुत घरो के छोटे-बडे सुख मे आग लगा दी है। शराब पी कर आदमी हेवान बन जाता है। अपने ही बीवी-बच्चो के साथ मारपीट करता है। शराब की लत मे वह चोरी करना भी सीख जाता है।

३. शक्रस्तव की आठवी गाथा :- जिन्होने राग द्वेष पर विजय पाई है। अपने उपदेश से दुसरो को जिताया जो सम्यगदर्शनादी जहाज से संसारसमुद्र से तैर गए है। तथा अन्य को संसार समुद्र से तिरते है जिनके पास जीवो का तत्वबोध है जो दुसरो को बोध देते है। सर्व कर्म के बंधनो से मुक्त है और मुक्त करनेवाले है। - ९ सब कुछ जानने वाले को तथा सब कुछ देखलेने वालो को। जँहा जाने के बाद संसार मे वापस नही आनेवाले ऐसे सिद्धगति नाम के स्थान को पा लेने वाले को जिन्होने सात-प्रकार के भय को जीता है। ऐसे जिनेश्वरो को नमस्कार...।

४. श्री शांतीनाथ प्रभु का मेघरथ राजा के भव मे भगवान अंत्यत धर्मनिष्ठ थे। इनकी प्रशंसा ईशानेन्द्र ने अपनी सभा मे की। वहा एक देव यह प्रशंसा सुन नही पाया और वह कबुतर व बाज के रुप मे आया। कबुतर ने घायल अवस्था मे राजा की शरण ली और बाज प्रभु के पास आ कर उसका भक्षण मागने लगा। राजा ने कबुतर देने की ना कही और कबुतर के वजन बराबर राजा ने खुद का मांस काट कर दिया। देवमाया से कबुतर का वजन बढ़ता गया। वह वजन के बराबर मांस नहीं होने पर प्रभु खुद ही तराजु मे बैठ गए।

५. नरक के जीव कुंभी मे उत्पन्न होते रहते है। विविध प्रकार के दुःखो को भोगते है। सतत दुःख को भोगते रहते है नरक के जीवो को पल भर के लिए भी दुःख से छुटकारा नही मिलता। सातो नरक मे घोर अंधेरा ही रहता है। कभी जब परमात्मा का कल्याणक होता है। तब नरक के जीवो को क्षणभर के लिए सुख की अनुभूति होती है। और उनकी अनुमोदना कर सम्यक्तव को प्राप्त करते है पर ऐसा कदाचित ही होता है।